असहयोग आन्दोलन–

★ पहला जन आंदोलन था The first mass movement was

★ 1 अगस्त 1920 से शुरू हुआ Started from 1 August 1920

★ असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव 4 सितम्बर 1920 (कलकत्ता अधिवेशन पारित हुआ) Resolution of non-cooperation movement 4 September 1920 (Calcutta session passed)

★ अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार हुआ।
there was a boycott of English goods.

★ स्कूल, कॉलेज, कोर्ट, मजदूर, हडताल
school, college, court, laborers, strike

★ चौरा–चौरी कांड – (गोरखपुर यूनाइटेड प्रोर्विस) – 4 फरवरी 1922
Chaura-Chauri incident - (Gorakhpur United Provinces) - 4 February 1922

⇒ चौरी-चौरा कांड - 4 Feb. 1922

↳ गोरखपुर (U.P.) में चौरी-चौरा नामक स्थान पर

↳ इस जगह पर रुक उग्र भीड़ ने पुलिस-चौकी में आग लगा दी जिसमें 22 पुलिसकर्मियों की जलकर मृत्यु हो गई।

⇒ पुलिस चौकी का थानेदार → गुप्तेश्वर सिंह

⇒ उग्र भीड़ का नेतृत्व (Leader) ⇒ भगवान अहीर

⇒ इस घटना के समय गांधी जी बारदोली (गुजरात) में थे।

⇒ इस घटना की जानकारी गांधी जी को तार (Letter) द्वारा गोरखपुर के निवासी दशरथ प्रसाद द्विवेदी ने दी थी।

⇒ इस घटना के कारण गांधी जी ने 12 Feb. 1922 को असहयोग आंदोलन वापस ले लिया।

⇒ इस घटना के कारण गांधी जी ने असहयोग आंदोलन को हिमालय जैसी बड़ी भूल बताया।

⇒ इस केस के अभियुक्तों का मुकदमा (case) मदन मोहन मालवीय ने लड़ा।

⇒ आंदोलन समाप्त होने कारण गांधी जी की स्थिति कमजोर हुई।

तथा ब्रिटिश सरकार ने 10 March 1922 को गांधी जी को गिरफ्तार किया।

⇒ सजा ⇒ 6 वर्ष ⇒ न्यायाधीश ब्रूमफील्ड ने असंतोष फैलाने के कारण सजा दी।

⇒ लेकिन स्वास्थ्य खराब होने कारण 5 Feb. 1924 को जेल से रिहा कर दिया गया।

खिलाफत आंदोलन (1919-1924)

(1914-1918 ⇒ प्रथम विश्व युद्ध)

→ खलीफा (इस्लाम धर्म के संस्थापक ⇒ मो० साहब)

तुर्की

⇓

को मृत्यु के पश्चात् इनके उत्तराधिकारी खलीफा।

⇒ खिलाफत कमेटी बाम्बे ⇒ 1919 में

⇒ अखिल भारतीय खिलाफत कमेटी ⇒ 23 Nov. 1920

⇓

इसी खिलाफत में गांधी और मौलाना अबुल कलाम आजाद अली बंधुओं से जुड़े।

⇒ समाप्त ⇒ 1924 में, मुस्तफा कमाल पाशा ने तुर्की में खलीफा पद को 1924 में समाप्त कर दिया और इसी के साथ खिलाफत आंदोलन समाप्त।

मोपला विद्रोह (किसान विद्रोह) => 1921 में

- मालाबार तट (केरल में)
- नेतृत्व => अली मुसलियार
  => वारियान कुन्नथु

❖ खिलाफत आंदोलन – (1919–24)

★ लखनऊ से शुरू हुआ। started from Lucknow.

★ मोहम्मद अली और शौकत अली ने चलाया था। (अली बंधु)
was run by Mohammad Ali and Shaukat Ali.

★ नवम्बर 1920 में गांधी जी जुड़ गये जिसका विरोध जिन्ना ने किया।
Gandhiji joined in November 1920, which was opposed by Jinnah.

❖ सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930–34)

★ इसे 'नमक सत्याग्रह' के नाम से जाना जाता है।
it is known as 'Salt Satyagraha'.

★ प्रथम (12 मार्च 1930 – 06 अप्रैल 1930)
first (12 March 1930 - 04 April 1930)

★ द्वितीय (29 दिसम्बर 1931 से पुनः)
second (again from 29 December 1931)

स्वराज पार्टी:- स्थापना 1923 ई० को प्रयागराज में

Swaraj Party:- Established in 1923 in Prayagraj

संस्थापक:- सी० आर० दास (अध्यक्ष)/**Founder:-** ~~So.~~ C.R. ~~President~~ Chairman Das

→ Pt. मोतीलाल नेहरू (महासचिव)

Pt Motilal Nehru (General Secretary)

1923
1) केंद्रीय विधानसभा के निर्वाचन।

असहयोग आंदोलन → नकारात्मक कार्यक्रम
↳ किसी भी प्रकार के निर्वाचनों में भाग नहीं लेंगे।

समर्थक विट्ठलभाई पटेल, हकीम अजमल खां, श्री निवास आयंग, प० मदन मोहन मालवीय, एम० आर०जयकर

Supporters: Vitthalbhai Patel, Hakim Ajmal Khan, Srinivas Ayang, Pt. Madan Mohan Malviya, M.R. Jayakar

उद्देश्य:- भारत को स्वराज दिलाना। Objective:- To get Swaraj for India.

① ⇓ स्वराज पार्टी

② Independency (स्वतंत्रता)

② परिषद में प्रवेश कर असहयोग के कार्यक्रमों को अपनाना और असहयोग आन्दोलन को सफल बनाना।

To join the council and adopt the programs of non-cooperation and make the non-cooperation movement successful.

③ स्वराज आम जनता के लिए होना चाहिए केवल कुछ वर्गों के लिए नहीं, इस प्रसिद्ध सूत्र की घोषणा C.R. दास ने की थी।

Swaraj should be for the common people and not only for the some classes, this famous slogan was declared by C.R. Das.

केन्द्रीय विधान सभा

Central legislative Assembly का प्रथम भारतीय स्पीकर विठ्ठलभाई पटेल.

Vithalbhai Patel was the first Indian Speaker of the Central Legislative Assembly.

Nov. 1924 में गांधी जी, **C. R.** दास व मोतीलाल नेहरू के मध्य एक महत्वपूर्ण समझौता हुआ जिसे गांधी-दास पैक्ट के नाम से जाना जाता है।

n Nov. 1924, an important agreement was signed between Gandhi, C. R. Das and Motilal Nehru, known as the Gandhi-Das Pact.

साइमन कमीशन (1921-1928)Simon Commission (1921-1928)

1919 के भारत शासन अधिनियम में यह प्रावधान था आधनियम पारित होने के 10 वर्ष बाद संवैधानिक आयोग को नियुक्ति की जाएगी जो इस बात की जांच करेगा कि अधिनियम कहाँ तक सफल रहा।

The Government of India Act of 1919 had a provision that a constitutional commission would be appointed 10 years after the passing of the Act, which would investigate to what extent the Act was successful.

साइमन कमीशन का गठन = 8 Nov. 1927 ई० को भारत के राज्य सचिव बर्केनहैड द्वारा जॉन साइमन की अध्यक्षता में 7 सदस्य वाला आयोग का गठन हुआ।/ Formation of Simon Commission = On 8 Nov. 1927, a 7-member commission was formed under the chairmanship of John Simon by Birkenhead, the Secretary of State for India.

साइमन कमीशन का अन्य नाम श्वेत आयोग

The other name of the Simon Commission is White Commission

साइमन कमीशन के 7 सदस्यों में जान साइन (लिवरल पार्टी) तथा एटली (लेबर) पार्टी का सदस्य था। Among the 7 members of the Simon Commission, John Simon (Liberal Party) and Attlee (Labour) were members of the party.

11 Dec. 1927 को प्रयागराज में हुए सर्वदलीय सम्मेलन में साइमन कमीशन के बहिष्कार का निर्णय लिया गया /On 11 December 1927, in the all-party conference held in Prayagraj, it was decided to boycott the Simon Commission.

कमीशन के आगमन के समय भारत का G.G. इरविन था।

At the time of the arrival of the commission, the President of India was G.G. Irwin.

इरविन के सुझाव पर भारतीयों को साइमन कमीशन से बाहर रखा गया था।

On the suggestion of Irwin, Indians were kept out of the Simon Commission.

कमीशन का भारत आगमन) 3 feb. 1928 को मुम्बई पहुंचा तो काले झण्डे दिखाए गए तथा Simon Go Back का नारा तथा मुम्बई में हड़ताल रखा।

When the Commission arrived in India on 3 February 1928, it reached Mumbai and black flags were shown to it and the slogan of Simon Go Back was raised and a strike was organized in Mumbai.

Simon Go Back का नारा युसूफ मेहर अली ने दिया था।

The slogan of Simon Go Back was given by Yusuf Mehar Ali.

लखनऊ में खली फुज्जमा तथा मदास में टी० प्रकाशम ने आयोग का विरोध किया था। Khalil Fujjama in Lucknow and T. Prakasam in Madras opposed the Commission.

लखनऊ में जवाहर लाल नेहरू तथा गोविंद वल्लभ पंत को कमीशन का विरोध करते समय लाठी चार्ज झेलना पड़ा था। Jawaharlal Nehru and Govind Vallabh Pant had to face lathi charge while opposing the Commission in Lucknow.

31 Oct. 1928 को लाहौर में लाला लाजपत राय के नेतृत्व में साइमन कमीशन का विरोध किया गया। On 31 Oct. 1928, Simon Commission was opposed in Lahore under the leadership of Lala Lajpat Rai.

लाला लाजपत राय पर लाहौर के पुलिस अधीक्षक स्कॉट ने लाठी बरसाई थे।

Lala Lajpat Rai was beaten with a stick by Lahore's police superintendent Scott.

लाला लाजपत राय की मृत्यु पर गांधी जी ने कहा कि सौरमण्डल से एक सितारा डूब गया।

On the death of Lala Lajpat Rai, Gandhiji said that a star has set from the solar system.

सर शिव स्वामी अय्यर ने इसको रिपोर्ट को रद्दी की टोकरी में फेंकने लायक बताया था।

Sir Shiva Swami Iyer said that this report should be thrown in the dustbin.

कमीशन को रिपोर्ट:- Report of the Commission:-

(1) कमीशन ने द्वैध शासन को समाप्त करने एवं प्रांतो को स्वायत्ता सौंपने की मांग की थी। The Commission demanded the abolition of Dyarchy and granting autonomy to the provinces.

(2) गर्वनर जनरल एवं गर्वनरों के अधिकार को बढ़ाने का सुझाव दिया था।

It suggested increasing the powers of the Governor General and Governors.

(3) प्रांतीय विधानमंडलों का विस्तार एवं मुसलमानों को विशेष प्रतिनिधित्व देने का प्रस्ताव रखा।

It proposed the expansion of provincial legislatures and special representation to Muslims.

1928 में साइमन कमीशन प्रशासनिक सुधार पर विचार के लिए भारत आया था।

In 1928, the Simon Commission came to India to consider administrative reforms.

सविनय अवज्ञा आंदोलन Civil Disobedience Movement

शुरुआत:- 12 March 1930 ई० को साबरमती आश्वम (अहमदाबाद)

Beginning:- 12 March 1930 at Sabarmati Ashvam (Ahmedabad)

1929 ई० में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस कार्यकारिणी सभा में सविनय अवज्ञा आंदोलन को शुरू करने का अधिकार दिया गया।

In 1929, in the Lahore session of the Congress, the Congress Working Committee was given the right to start the Civil Disobedience Movement.

दाण्डी मार्च Dandi March:- 12 March 1930- 6 April 1930

कुल सहयोगी:- 78 सदस्य - सर्वाधिक संख्या गुजरात

otal participants:- 78 members - Highest number Gujarat

दूरी ⇒ 385km. (241 मील)/ Distance ⇒ 385km. (241 miles)

यात्रा ⇒ 24 Day's/Trip ⇒ 24 Day's

दांडी यात्रा का प्रारंभ करते समय गांधी जी ने कहा था कि शाक्ते के विरुद्ध अधिकार को इस लड़ाई में मैं विश्व की सहानुभूति चाहता हूँ।

While starting the Dandi march, Gandhi ji had said that I want the sympathy of the world in this fight for power against power.

दांडी यात्रा "अंत तक लड़ो' आदर्श वाक्य के साथ शुरू की गई थी।

The Dandi march was started with the motto "Fight till the end".

नमक कानून का उल्लंघन ⇒ 6 Abril 1930 को दाण्डी (नौसारी जनपद, गुजरात)

Violation of salt law ⇒ 6 April 1930 at Dandi (Nausari district, Gujarat)

सुभाष चन्द्र बोस ने गांधी जी की दांडी यात्रा नेपोलियन के एल्वा से पेरिस तथा मुसोलिनी की रोम मार्च से तुलना की थी।

Subhash Chandra Bose compared Gandhiji's Dandi March to Napoleon's Elba to Paris and Mussolini's Rome March.

गांधी जी ने दाण्डी यात्रा के दौरान माही नदी को पार किया था।

Gandhi crossed the Mahi river during the Dandi march.

सावनय अवज्ञा के दौरान पाश्चमोत्तर सीमा प्रांत में गढ़वाल सैनिको ने प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने से इंकार कर दिया था।

During the Civil Disobedience, the Garhwal soldiers in the North-West Frontier Province refused to fire on the demonstrators.

दक्षिण भारत में नमक आन्दोलन के दौरान त्रिचना - पल्ली (वेदारण्यम्) तक यात्रा कर नमक कानून से० गोपालाचारी ने तोड़ा था।

During the Salt Movement in South India, Gopalachari broke the Salt Law by travelling to Trichy-Palli (Vedaranyam).

नमक आन्दोलन के दौरान गांधी जी को गिरफ्तार करके यरवदा जेल में रखा गया था।

During the Salt Satyagraha, Gandhiji was arrested and kept in Yerawada Jail.

सविनय अवज्ञा के दौरान कांग्रेस ने न लगान, न टैक्स देने का अभियान संयुक्त प्रांत से शुरू किया

During the Civil Disobedience, Congress started a campaign of paying no rent or tax from the United Province.

गांधी जी द्वारा संचालित महिलाओं को सर्वाधिक भागीदारी नमक सत्याग्रह में मानी जाती है। (महिलाओं को सरोजनी नायडू)

The maximum participation of women is considered in the Salt Satyagraha led by Gandhiji. (Sarojini Naidu to the women)

दाण्डी मार्च के दौरान गांधी जी ने कहा था कि घुटने टेक कर मैने रोटी मांगी थी, जबाव में मुझे पत्थर मिला।

During the Dandi March, Gandhiji had said that I had asked for bread on my knees, but in response I got stones.

सविनय अवज्ञा के दौरान ग्रामीण जनता ने चौकीदारा कर अदा करेन से पूर्वी भारत में मना कर दिया था।

During the Civil Disobedience, the rural population in eastern India refused to pay the Chowkidara tax.

धरासना नमक आंदोलन के दौरान मुम्बई का केंद्र बिंदु था।

Dharasana was the focal point in Mumbai during the Salt Satyagraha.

June 1930 में गांधी जी की गिरफ्तारी के बाद सविनय अवज्ञा का नेतृत्व अब्बास तैयबजी ने किया था।

After Gandhiji's arrest in June 1930, the civil disobedience was led by Abbas Tayyabji.

आचार्य विनोवा भावे सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने पर प्रथम बार गिरफ्तार हुए थे।

Acharya Vinoba Bhave was arrested for the first time for participating in the Civil Disobedience Movement.

गांधी जी ने विदेशी पत्रकार (अमेरिकी पत्रकार) वेब मिलर को दांडी मार्च के समय अपने सावर मती आश्रम पर ठहराया था।

Gandhiji had lodged foreign journalist (American journalist) Webb Miller at his Sawarmati Ashram during the Dandi March.

सविनय अवज्ञा के दौरान अंग्रेजी सरकार के विरुध्द पेशावर काण्ड का नायक वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली था।

Veer Chandra Singh Garhwali was the hero of the Peshawar incident against the British government during the Civil Disobedience

कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को आधिकारिक रूप से May 1933 में निलंबित और may 1934 में वापिस ले लिया।

The Congress officially suspended the Civil Disobedience Movement in May 1933 and withdrew it in May 1934.

1933 ई० में सुभाष चन्द्र बोस व विट्ठलभाई पटेल ने कहा था कि एक राजनैतिक नेता के रूप में गांधी जी असफल रहे।

In 1933, Subhash Chandra Bose and Vitthalbhai Patel had said that Gandhiji was a failure as a political leader.